Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A - Part I Paper - II
Metaphysics and Epistemology

Notes "Pluralism"
(अनेकवाद)

GRB BOOKS

अनेकतत्ववाद वह तत्व शास्त्रीय सिद्धान्त है जो मूलतत्व की संख्या को अनेक मानता है।

"Pluralism is a Metaphysical doctrine with regards to the number of ultimate reality which holds that their are many ultimate realityes.

इस विश्व में अनेक पदार्थों के अस्तित्व का हमें अनुभव होता है। और अनेक पदार्थों की व्याख्या किसी एक तत्व पर संभव नहीं है। क्योंकि इस विश्व के सभी पदार्थ समान रूप से वास्तविक हैं। किसी एक को हम मौलिक या गौण नहीं कह सकते हैं। प्रत्येक पदार्थ अपने अस्तित्व के लिए स्वयं उत्तरदायी है। इसलिए विश्व एकात्मक है। एक विश्व जो कहा जाता है वस्तुतः यह कहने का तरीका मात्र है।

अनेकवाद एकतत्व शास्त्रीय सिद्धान्त के रूप में एकतत्व का विरोधी सिद्धान्त के रूप में एकतत्व का विरोधी सिद्धान्त है। अनेकतत्ववाद को लेकर मुख्य रूप से एक प्रश्न उठता है वह यह है कि अगर अनेकवाद मूलतत्व की संख्या को अनेक मानते हैं तो मूलतत्व का स्वरूप क्या है। इस प्रश्न को

सुगम पास-बुक

Notes

GRB BOOKS

लेकर मुख्य रूप से एक प्रश्न उठता है वह यह है कि अगर अनेकवाद मूलतत्व की संख्या को अनेक मानते हैं तो मूलतत्व का स्वरूप क्या है। इस प्रश्न को लेकर अनेकवाद दो भागों में बँट जाते हैं।—

1. सर्वांगीन अनेकवाद (All round pluralism) — इसे कहा जाता है जो मूलतत्व की संख्या और स्वरूप दोनों में अनेकता को स्विकार करे।

2. मूल तत्व की संख्या अनेक है लेकिन उसका स्वरूप एक है। रहा दूसरे उत्तर को लेकर एक प्रश्न उठता है कि वह एक स्वरूप कैसा है? इसके तीन उत्तर दिए गये हैं—

1. भौतिकवादी अनेकवाद (Matterialistic pluralism)

2. प्रत्ययवादी अनेकवाद - (Idealistic Pluralism)

3. अनुभयवाद अनेकवाद - (Neutralistic pluralism)

1. भौतिकवादी अनेकवाद वह सिद्धान्त है जो मूलतत्व की संख्या को अनेक मानता है लेकिन उसके स्वरूप को भौतिक मानता है।

2. प्रत्ययवादी अनेकवाद वह सिद्धान्त है जो मूलतत्व की संख्या को अनेक मानता है लेकिन उसके स्वरूप को आध्यात्मिक मानता है।

3. अनुभयवादी अनेकवाद वह सिद्धान्त है जो मूलतत्व की

सुगम पास-बुक

GRB BOOKS

संख्या को अनेक मानता है। वेदान्त इसके स्वरूप को न तो भौतिक मानता है न आध्यात्मिक बल्कि दोनों से परे मानता है।

इस तरह अनेकवाद मुख्य रूप से प्रकृति विषयक प्रश्नका चार उत्तर देता है। अतः इसके चार भेद हो जाते हैं-

1. सर्वांगीन अनेकवाद
2. भौतिकवादी अनेकवाद
3. प्रत्ययवादी अनेकवाद
4. अनुभववादी अनेकवाद

1. All round pluralism —
सर्वांगीन अनेकवाद का स्पष्ट उदाहरण पाश्चात्य दर्शन को नहीं मिलता है। इसका स्पष्ट उदाहरण भारतीय दर्शन के वैशेषिक दर्शन में मिलता है। वैशेषिक दर्शन कुल मिलाकर सात प्रकार के तत्वों को स्वीकार करता है। 1. द्रव्य, 2. गुण, 3. कर्म 4. सामान्य 5. संयोग, 6. समवाय 7. अभाव।

मिमांसा दर्शन भी आंशिक रूप से सर्वांगीन अनेकतत्ववाद को स्वीकार करता है। इसके अनुसार अनुभव - जगत और इसके अन्दर विद्यमान अनेकता दोनों वास्तविक है। अनेक आत्माएँ, भौतिक पदार्थ, देवताएँ स्वर्ग नरक आदि सभी सत्य है।

2. Matterialistic pluralism भौतिकवादी प्रत्ययवाद का स्पष्ट

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

उदाहरण भारतीय और पाश्चात्य दोनों दर्शनों में मिलता है। पाश्चात्य दर्शन में एम्पेडाक्लीज (Empedacles) डेमोक्राइटस (Democretus) एपीक्यूरस (Epicurius) Dalton आदि इसके समर्थक हैं। Empedecles ने चार मूलतत्वों को स्वीकार किया - 1. पृथ्वी 2. जल, 3. वायु (4) अग्नि। ये चारों भौतिक पदार्थ परमाणु हैं किन्तु Democretus और Epicurius मानते हैं कि अनन्त भौतिक परमाणु मूलतत्व हैं। इसके समर्थक Dalton भी हैं। ये भी अनेक भौतिक परमाणुओं की सत्ता स्वीकार करते हैं। परमाणुओं का विभाजन होने पर इलेक्ट्रन प्रोट्रन आदि पाये जाते हैं इनकी संख्या अनेक हैं। भारतीय दर्शन में चार्वाक इस मत के समर्थक हैं। यह भी चार भौतिक तत्वों को स्वीकार करता है। 1 पृथ्वी, 2. जल, 3. वायु, 4. अग्नि।

3. Idealistic pluralism

भारतीय दर्शन में इसका उदाहरण हमें नहीं मिलता है। इसका स्पष्ट उदाहरण पाश्चात्य दर्शन में Howison और Metaggart आदि के दर्शनों में मिलता है। आंशिक रूप से Leibnitz भी इनके समर्थक कहे जा सकते हैं। Metaggart भी मानते हैं कि मूलतत्व अनेक आत्माओं इसीलिये तथा और माण्डपको का संकलन

पास-बुक
EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

है। सभी एक दूसरे से स्वतंत्र
हैं और अपने अस्तित्व के लिए
आप उत्तरदायी है। इस प्रकार
Howison के लिए विश्व एक
ही आदर्श से अनुप्राणित अनेक
पुरुषों का समूह है जिसके
सदस्य परस्पर - सम्बद्ध होते
हुए भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व
बनाये रहते हैं।

Metaggart के
अनुसार अवयवों का अस्तित्व
अवयव पर निरभर करता है।
Hale का अस्तित्व Part पर
निरभर करता है। विश्व का अस्तित्व
आत्मा पर निरभर करता है। विश्व
का अस्तित्व आत्मा पर निरभर
करता है। आत्मा का स्वतन्त्र
अस्तित्व है। Leibniz भी
Monads को अनेक और एक-
दूसरे से स्वतंत्र मानते हैं।

4. Neutrelistic
Pluralism — भारतीय दर्शन में
इसका उदाहरण नहीं मिलता है।
पाश्चात्य दर्शन में जेम्स, Holt,
Perry Russal आदि इसके
समर्थक हैं वे मानते हैं कि
मूलतत्वों की संख्या अनेक है
और प्रकृति अनुभय अर्थात
जड़ - चेतन से भिन्न है।

अनेकवाद साक्षात
रूप से अपने सिद्धान्त
की स्थापना करते हैं।
इसके अनेक प्रमाण हैं-

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

1. Empirical evidence of (अनुभवात्मक पदार्थ)

2. externality of relations (अंकित सम्बन्धों की बाह्यता)

3. Morality (नैतिकता)

1. अनुभवात्मक पदार्थ अथवा अनुभव के द्वारा हमें अनेक प्रकार के अस्तित्व का ज्ञान होता है जो विश्व को अनेकात्मक बतलाता है पदार्थों की अनेकता ही सर्वप्रथम अनुभव होती है। पीछे अपनी बौद्धिक क्रियाओं द्वारा उनका वर्गीकरण कर उनको भिन्न-भिन्न वर्गों में रखकर हम उन्हें एकत्रित करते हैं। अतः उनकी अनेकता वास्तविक है और एकता बुद्धिजन्य।

2. सम्बन्ध दो तरह के होते हैं। आन्तरिक और बाह्य आन्तरिक सम्बन्ध दो पदार्थों के बीच होता है जिसमें पदार्थ का स्वरूप बदल जाता है। जैसे - आग और मोम का सम्बन्ध होने से मोम गलने लगता है। बाह्य सम्बन्ध दो स्वतन्त्र पदार्थों के बीच होता है। जिसमें पदार्थ का स्वरूप ज्यों का त्यों रहता है। जैसे — जब मैं कमरे में आती हूँ तो कमरा और मेरे बीच सम्बन्ध स्थापित होता है किन्तु इस सम्बन्ध की अपेक्षा दोनों में से किसी को नहीं है, क्योंकि जब यह सम्बन्ध टूटता है तब भी दोनों में

सुगम पास-बुक

Notes
GRB BOOKS

कोई परिवर्तन नहीं होता है। अनेकवाद के लिए विभिन्न पदार्थों की पारस्परिक स्वतंत्रता आवश्यक है और यह स्वतंत्रता सम्बन्धों की बाह्यता का परिणाम है। अतः सम्बन्धों की बाह्यता अनेकवाद को प्रमाणित करती है।

3. नैतिकता – यह तर्क विलियम जेम्स के द्वारा दिया गया है। मनुष्य नैतिककर्ता होता है। उसके कर्मों का नैतिक मूल्यांकन किया जाता है क्योंकि उसके कर्म स्वैच्छिक होते हैं। अतएव नैतिकता की संभावना और व्याख्या के लिए अनेकवाद को मानना आवश्यक है।

कुछ Destructive arguments है जिसके द्वारा अनेकवादी दार्शनिक एकवाद की आलोचना करके परोक्ष रूप से अपने सिद्धान्त की स्थापना करते हैं।

आलोचना –

1. अनेकवाद मूल तत्व के रूप में अनेक पदार्थों को मानता है लेकिन मूल तत्व एक ही होते हैं। अनेक तत्व मूल तत्व नहीं हो सकते हैं। अगर मूल तत्व को अनेक मान लिया जाए तो प्रत्येक पदार्थ एक दूसरे को सीमित करने का प्रयास करेगा तो वैसी स्थिति में वह परमार्थ नहीं रह पाएगा।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

2. यह अनुभव के एकपक्ष पर जोर देता है। अगर हमें विश्व में अनेकता का भी अनुभव होता है, तो हमें एकता का भी अनुभव होता है। अनेकवादी इस बात को भूल जाते हैं। जैसे — मनुष्य अनेक हैं लेकिन मनुष्य होने के कारण वे सभी एक हैं। यह विचार दोषपूर्ण है।

3. अनेकवादी विचार बाह्य सम्बन्ध के सिद्धान्तों पर आश्रित है। लेकिन बाह्य सम्बन्ध दोषपूर्ण है। सभी के सभी सम्बन्ध बाह्य नहीं होते हैं। जैसे — मोम और आग का सम्बन्ध। बाह्य सम्बन्ध का सिद्धान्त अबौद्धिक है क्योंकि इसके द्वारा हम अनावस्था दोष से ग्रसित हो जाते हैं Fallacy of infinite regress (अनन्त रूप से पीछे हटने पर भी इस प्रक्रिया का अन्त नहीं होगा।

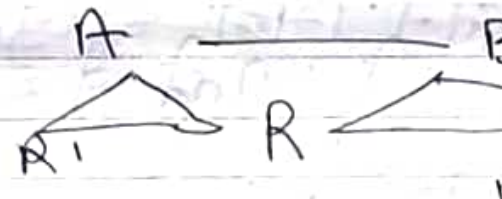

4. अगर अनेक पदार्थों को एक दूसरे से स्वतन्त्र मान लिया जाय तो यह बात समझ में नहीं आती है कि एक पदार्थ दूसरे को प्रभावित कैसे करता है। अगर हम अनेक पदार्थों को अनेक मान लें तो यह सिद्धान्त सन्तोषप्रद नहीं है। यह पूर्णरूप से हमारी बुद्धि को सन्तुष्ट नहीं कर पाता है।

इस तरह अनेकवाद के यही सब गुण और अवगुण है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM